International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 6 | June 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i6.103

जनपद बिजनौर में लोकगीतों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अनुशीलन (संस्कार गीतों के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ0 बबीता
सहायक प्रोफेसर (चित्रकला विभाग), जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर
Email: mrsbabitachauhan@gmail.com

Received: 06 June 2026 | **Accepted:** 19 June 2026 | **Published:** 30 June 2026

सारांश

उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बिजनौर की विविधतापूर्ण एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में लोकगीतों का महत्वपूर्ण स्थान है। लोकगीत आज भी जनपद में पारिवारिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। विशेष रूप से संस्कार गीत जिनके अंतर्गत गर्भाधान, जन्म, नामकरण, मुंडन, अन्नप्राशन, यज्ञोपवीत, विवाह तथा मृत्यु संस्कारों के अवसर पर गाए जाने वाले महत्वपूर्ण लोकगीत हैं। इनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन न होकर सामाजिक जीवन की सांस्कृतिक चेतना, लोक विश्वास, नैतिक मूल्य तथा सामाजिक संबंधों को संरक्षण प्रदान करना है। जनपद में कलात्मकता की दृष्टि से संस्कार लोकगीतों मे भाषा की सरलता तथा लयात्मकता का प्रभावशाली रूप से प्रयोग मिलता है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण, बढ़ते नगरीयकरण तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण जनपद में लोकगीतों की परंपरा धीरे–धीरे अपने मूल स्वरूप को खोती जा रही है। नई पीढ़ी का लोक परंपराओं की प्रति जुड़ाव कम हो रहा है। अतः आवश्यकता है कि जनपद की इस धरोहर को संरक्षण मिले जिससे जनपद की सांस्कृतिक एवं सामाजिक पहचान जीवित रहे। यही प्रस्तुत शोध पत्र का मूल उद्देश्य है।

मुख्य शब्दः– *लोकगीत, संस्कार, धर्म, संगीत तथा कथाऐं*

प्रस्तावना

जनपद बिजनौर लोकगीतों की दृष्टि से एक समृद्ध जनपद है। इसके लोकसमाज में प्राचीन काल से ही चले आ रहे असंख्य लोकगीत आज भी जनकंठों में सुरक्षित है और निरन्तर नये–नये लोकगीतों की रचना हो रही है। जनपद के ग्रामों में लोकगीतो का विशाल भण्डार है तथा इनके संकलन और संग्रह के लिए दीर्घावधि की आवश्यकता है। मेरे द्वारा किये गये जनपदीय सर्वेक्षण के आधार पर इतना अवश्य ही कहा जा सकता है कि इस जनपद में लोकगीतों की एक विशाल राशि के भण्डार है जिसके आदि और अन्त का कुछ भी पता नहीं है। लोकगीतों की यह वह बड़ी धारा है जिसमें अनेक छोटी–मोटी धाराओं ने मिल कर उसे सागर की तरह गम्भीर बना दिया है। सदियों के घात–प्रतिघातों ने उसमें आश्रय पाया है। मन की विभिन्न स्थितियों ने उसमें अपने मन के ताने–बाने बुने हैं। स्त्री–पुरुष ने थक हार कर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है। इसकी ध्वनि में बालक सोए हैं। जवानों में प्रेम की मस्ती छाई है, बूढ़ों ने मन बहलाऐं हैं, विरही युवक–युवतियों ने मन की कसक मिटाई है, पार्थिकों ने थकावट दूर की है, किसानों के अपने बड़े–बड़े खेतों को जोता है और मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाए हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. जनपद बिजनौर के ग्रामीण क्षेत्र में प्रचलित लोकगीतों का संकलन करना।
2. विभिन्न संस्कार गीतों से संबंधित परंपराओं का विश्लेषण करना।
3. लोकगीतों में व्याप्त स्थानीय रीति–रिवाज, संस्कृति, धार्मिक विश्वास और मान्यताओं का अध्ययन करना।
4. जनपद के संस्कार लोकगीतों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव और परिवर्तन का मूल्यांकन करना।
5. जनपद के संस्कार लोकगीतों के कलात्मक पक्षों तथा वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता का वर्णन करना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रचलित संस्कार गीतों के अध्ययन में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। लोकगीतों के संकलन में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार करके, समूह में चर्चा करके तथा संस्कार के अवसर पर गीतों को सुनकर संकलन किया गया है। द्वितीय स्रोतों में जनपद स्तर पर विभिन्न विद्वानों की पुस्तक, शोध–ग्रंथ, पत्र–पत्रिका तथा लोक साहित्य का अध्ययन करके लोकगीतों का संकलन किया गया है।

उपलब्ध लोकगीतों का संकलन

जनपद के ग्रामीण अंचलों में भ्रमण करते समय मेरे द्वारा जनपद में गाये जाने वाले सहस्रों लोकगीतों को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ, किन्तु अध्ययन के लिए अध्येता द्वारा उपादेयता की दृष्टि से कुछ ही ऐसे सरस एवं भावपूर्ण गीतों को चुना गया जिसमे जनपद की लोक संस्कृति और कलात्मकता का सच्चा स्वरूप विरूपित हुआ है। संकलित लोकगीतों में जनपदीय लोकजीवन में गाए जाने वाले लगभग सभी प्रकार के लोकगीत आ गए हैं, जिनमें परम्परागत भारतीय जीवन तथा भारतीय संस्कृति का सच्चा इतिहास सुरक्षित है। इनमें जनपदीय लोकजीवन की पारिवारिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक और कला तथा सौन्दर्य सम्बन्धी परिस्थितियों, आकांक्षाओं और आदर्शों का सहज चित्रण हुआ है।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

लोकगीतों का वर्गीकरण

"लोक एक अविभाज्य संज्ञा है। अतः यथार्थ अर्थो में लोकगीतों का वर्गीकरण नहीं किया जा सकता" वास्तविक, रूप में लोकगीतों का वर्गीकरण एक अत्यन्त कठिन कार्य है फिर भी जीवन के अंगों–उपांगों के साथ लोकगीतों का सम्बन्ध निर्दिष्ट करते हुए अपने संग्रह के आधार पर अपने ढ़गं से लोकगीतों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। प० रामनरेश त्रिपाटी के अनुसार–

1. संस्कार सम्बन्धी गीत,
2. चक्की और चरखे के गीत,
3. धर्म गीत,
4. ऋतु गीत
5. खेती के गीत
6. भिखमंगी के गीत
7. मेले के गीत
8. जाति गीत
9. वीरगाथा गीत
10. कथा गीत
11. अनुभव वचन

मालवी लोक साहित्य के विद्धान डा० श्याम परमार के अनुसार लोकगीतों को पाँच श्रेणियों में रखा जा सकता है।

(1) जातियों की दृष्टि से
(2) संस्कारों और प्रथाओं की दृष्टि से
(3) धार्मिक विश्वासों की दृष्टि से
(4) कार्य के सम्बन्ध की दृष्टि से
(5) रस सृष्टि की दृष्टि से

शोधकर्ता ने व्यावहारिक अध्ययन एवं अनुशीलन की सुविधा ध्यान रखते हुए जनपद बिजनौर के लोकगीतों को आठ वर्गों में विभाजित किया है।

1. दार्शनिक और अध्यात्मिक लोकगीत
2. धर्मोपासना सम्बन्धी लोकगीत
3. संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीत
4. पर्वो एवं प्योहारों से सम्बन्धित लोकगीत
5. राजनीतिक भावनाओं से सम्बन्धित लोकगीत
6. जातीय आकांक्षाओं तथा गौरव से सम्बन्धित लोकगीत
7. प्रकृति से सम्बन्धित लोकगीत
8. अन्य– समसामयिक, कथागीत, बालगीत तथा ग्राम्य दोहे

प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य जनपद के संस्कार सम्बन्धी लोकगीतो का अध्ययन करना है।

संस्कारों से सम्बन्धित प्रमुख लोकगीत

प्राचीन काल से ही मानव जीवन में 16 संस्कारों का विधान है, किन्तु वर्तमान समय में प्राचीन काल से चले आ रहे समस्त संस्कार जनजीवन में प्रचलित नहीं है। जिनमे गर्भाधान, पुंसवन, पुत्र–जन्म, मुँडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना और मृत्यु संस्कार प्रमुख हैं। इनमें से भी प्रथम दो संस्कार आज प्रचलन में नही है। शेष छः संस्कार ही आजकल प्रमुखता से किए जाते हैं। इन विभिन्न संस्कारों के अवसर पर स्त्रियाँ अपने कोमल कण्ठ से गीत गा–गा कर जन मन का अनुरंजन करती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारा लोकजीवन संस्कारमय है। इस संस्कारमय जीवन की यात्रा के तीन सोपान है– जन्म, विवाह और मृत्यु मानव जीवन के इन सभी संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीतों की रचना हुई है। किन्तु जनपद में प्रमुख रूप से जन्म और विवाह संस्कार के लोकगीतों की हो प्राप्त हुई है अन्त्येष्टि संस्कार से सम्बन्धित लोकगीतों का प्रचलन इस जनपद में नहीं है।

जन्म संस्कार सम्बन्धी लोकगीत

जनपद में बिजनौर में जन्म संस्कार के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों में पुत्र–जन्म की आकांशा, पुत्र प्राप्ति पर आनन्द और उल्लास प्रकट किया जाता है। इसमें नारी हृदय की विविध भावनाओं एवं मातृ हृदय की मधुर लालसाओं की सुन्दर व्यंजना रहती है। इन लोकगीतों में गर्भाधान की अवस्था में गर्भवती स्त्री की शारीरिक और मानसिक दशा के बड़े ही सजीव चित्र मिलते है। जन्म संस्कार के अवसर पर ऐसे लोकगीत भी गाऐ जाते है जिनमें गर्भवती की खान–पान सम्बन्धी इच्छाओं के संकेत मिलते है।

मरा मन बड़ा भारी–भारी रे, मिजै जाम्मन मगां दो काली काली रे।
जाय ननदिया सास्सल कइयो मैतो सास्सल सै कै कै हारी रे।
मिजे खट्टी नौरंगिया मन भावे ताजी–ताजी रे,
मै तो सास्सल सै कै कै हारी रे।
मेरे मन भावे दइया ताजी–ताजी रे, मैतो सास्सल सै कै कै हारी रे।
जाय ननदिया दोरानी से कइयो, बलमा से कइयो मै तो कै कै हारी रे।
मेरा मन बड़ा भारी–भारी रे, मिजै जाम्मन मंगा दो काली–काली रे।

जन्म संस्कार पर ऐसे भी गीतों का उल्लेख मिलता है जिनमें भाभी पुत्र– प्राप्ति से पूर्व ननद को सुन्दर एवं बहुमुल्य आभूषण देने का आश्वासन देती है किन्तु बाद में ननद की मनमानी वस्तु देने में आनाकानी करती हैं और छठी, मुन्डन तथा विवाह आदि के अवसर पर कंगन देने के लिए टालती चली जाती है और अन्त में मुकर जाती हैं।

मांगे ननद रानी कंगना ललना के हुए का।
दें दो भाब्बी रानी कंगना ललना के हुए का।
जब होल्लर की छठी पुजैगी दे दूँगी तुम्हे कंगना होल्लर के हुए का।
जब होल्लर की छठी पुजं गई, मांगे ननद रानी कंगना होल्लर के हुए का।
जब होल्लर का मुंडडन होगा, दे दूंगी तुमे कंगना होल्लर के हुए का।
जब होल्लर का मुंडडन होग्या, मांगे ननद रानी कंगना होल्लर के हुए का।
जब होल्लर का ब्या रचेगा,.————।

छठी के गीत

छठी का आयोजन सामान्यतः बच्चे के छटे दिन किया जाता है, कभी–कभी छः माह या छः वर्ष पूरे होने पर भी छठी मनाई जाती हैं। छठी के दिन जो वस्त्र बच्चे को पहनाया जाता है उसे बुआ लाती है। लोकभाषा में उसे छटूलनी कहते हैं। छठी के दिन ही ननद सतिए रखती हैं, उसी दिन प्रसूता को प्रसूति गृह से बाहर शिशु सहित लाया जाता है। लोकभाषा में इसे बाहरी निकालना कहते हैं। छठी के दिन पत्नी, पति से अपने मायके वालो को भी आमन्त्रित करने के लिए कहती है। किन्तु पति उनकी उपेक्षा कर अपने परिवार के लोगों को ही आमन्त्रित करता है। मायके वालो की उपेक्षा पत्नी का असहय हो जाती है और वह प्रचण्ड रूप धारण कर लेती है।

गोरी आज है छठी का दिन किसै–किसै नौतियाऊ।
राजा नोतियाओ मइया हमारी, वो लाग्गै है सास्सल तुमारी।
रानी नोतियाओ मइया अपनी, वो लाग्गै है सास्सल तुमारी।
राजा नोतियाओ भाब्बी हमारी, वो लाग्गै है सलज तुमारी।
रानी नोतियाया भाब्बी अपनी, वो लाग्गै है जिठनी तुमारी।
डाल के उँगलिया हलक फाड़ डालूँ, सब अपनी–अपनी ई नौतियाए गलबलिया राजा।

नामकरण संस्कार

जनपद में नामकरण संस्कार को जसूटन कहते हैं। जो प्रायः शिशु के जन्म के सातवे, नवे, ग्यारहवें या इक्कीसवें दिन सम्पादित किया जाता है। जन्म संस्कार तक की अब तक की सारी विधियों का सम्पादन स्त्रियाँ लोकगीतों का गायन कर पूरा करती है। किन्तु नामकरण संस्कार पुरोहित या पण्डित द्वारा शास्त्रीय विधि–विधान से किया जाता है। इस अवसर पर जच्चा बिहाई आदि ही गाए जाते हैं जो बहुत ही रोचक, सरस तथा मातृ हृदय मधुर कल्पनाओं से परिपूर्ण होते है।

अच्छी घड़ी शुभ घड़ी उस दिन जानूँगी जिस दिन ललना अंगना मै खेल्लैगा।
दाद्दल–दाद्दल कुक्कैगा अर दाद्दी आय पुकारेगा, ललना अंगना मै खेल्लैगा।
पैरो मैं पैंजनिया पहनेगा अर ठुम्मक–ठुम्मक खेल्लैगा, ललना अंगना मै खेल्लैगा।
अच्छी घड़ी शुभ घड़ी उस दिन जानूँगी जिस दिन ललना अंगना मै खेल्लैगा।

अन्नप्राशन संस्कार

जन्म से छटे या आठवे मास में जब बालक में अन्न पचाने की शक्ति आ जाती हैं तब यह संस्कार किया जाता है। अन्नप्राशन संस्कार के बाद ही बच्चे को अन्न निर्मित वस्तुएँ खिलाना प्रारम्भ किया जाता है। पहली बार बच्चे को खीर खिलाई जाती है। इस संस्कार के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों में खान–पान से सम्बन्धित वस्तुओं एवं भोज्य पदार्थों में खीर पूरी आदि का वर्णन किया जाता है।

दाद्दी ने बनाई पूरी खीर, मेरे ललना मूँ जुठलइयो।
सखियाँ गावें मंगलचार, मेरे ललना मूँ जुठलइयो।
ताई नै बनाई पूरी खीर, मेरे ललना मूँ जुठलइयो।
सखियाँ गावे मंगलचार मेरे ललना भोग लगाइयो।
चाच्ची नै बनाए पकवान, मेरे ललना भोग लगाइयो।
ननदी नै बनाए मेवे–मिष्ठान, मेरे ललना मूँ जुठलइयो।

यज्ञोपवीत संस्कार

बिजनौर जनपद में भी यज्ञोपवीत संस्कार का प्रचलन है किन्तु अब यह प्रथा कुछ विशिष्ट परिवारों तथा विशेषरूप से ब्राह्मण वर्ग में ही प्रचलित रह गई है। शप्पथ ब्राह्मण के अनुसार ब्राह्मण बालक का यज्ञोपवीत संस्कार आठवें वर्ष में, क्षत्रिय बालक का ग्यारहवे वर्ष में और वैश्य बालक का बारहवे वर्ष में शास्त्र– सम्मत माना गया है। लोकजीवन में जनेऊ संस्कार के अवसर पर भी लोकगीतों के गायन का प्रचलन है। गीत, जच्चा, विहाई तथा बन्ने आदि ही गाए जाते हैं।

बन्ने का होरिया जनेऊ, बन्ना बना है वेदाचारी बन्ना बना है ब्रहमाचारी।
बन्ना मांगे हैं भीक, गुरु जी ने दई है सीख, बन्ना बना है भिच्छाचारी।
रोको रोको री माई, रोको रोको री ताई बन्ना बना है ब्रहमचारी।
गुरु जी ने दिया है मंतर, पढ़ाय, बन्ना कासी कू जाए, बन्ना बना है वेदाचारी।
रोको रोको री. माई, रोको रोको री ताई बन्ना बना है ब्रहमचारी।
बन्ने का होरिया जनेऊ, बन्ना बना है वेदाचारी बन्ना बना है ब्रहमाचारी।

विवाह संस्कार सम्बन्धी लोकगीत

जनपद में प्रचलित विवाह सम्बन्धी लोकाचारों में पहली प्रथा घेरना अथवा रोकना है। लोक भाषा में इसे निशानी देना भी कहते हैं। इस प्रथा के अनुसार कन्या पक्ष के यहाँ जाकर अपनी स्थिति के अनुसार वर को अंगूठी आदि देकर घेरना अथवा रोकना रस्म अदा करते हैं। रोकना के पश्चात सगाई की बात तय की जाती है। इस अवसर पर वर का तिलक भी किया जाता है। अतः इसे तिलक–संस्कार या टीका चढ़ना भी कहते हैं। तिलक संस्कार के अवसर पर भी वर पक्ष में लोकगीतों के गायन का प्रचलन है।

इस अवसर पर गीत घोड़ी–बन्ना ही गाए जाते हैं। सगाई हो जाने के बाद कन्या और वर पक्ष के पुरोहितों द्वारा विवाह सुझाया जाता है। कन्या पक्ष द्वारा तिथि स्वीकार कर लिए जाने पर वर पक्ष को विवाह की चिट्ठी भेजी जाती है जिसमें विवाह की निश्चित की गई तिथि को स्वीकार कर वर पक्ष से निश्चित तिथि हेतु विवाह हेतु पधारने की प्रार्थना की जाती है।

लग्न संस्कार

विवाह की तिथि निश्चित हो जाने पर कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष में विवाह से इक्कीस, पन्द्रह या दस दिन पूर्व लग्न भेजा जाता है। कन्या पक्ष में लग्न लिखे जाने के दिन लाड़ो और सुहाग गीत गाए जाते हैं। वर पक्ष में इस अवसर पर छोड़ी–बन्ना गीत गाए जाते हैं। लग्न आने पर वर पक्ष में हर्षोल्लास छा जाता हैं। स्त्रिया हर्षोल्लास पूर्वक लोकगीत का गायन करती है।

हुई है सुनैहरी रात लघन आई मेरे अंगना।
आओ साखियों मंगल गाओ, लघन आई मेरे अगंना।
आओ साखियों खील बँटाओ, लंघन आई मेरे अंगना।
फूलै फलावै भगवान लघन आई मेरे अंगना।
हुई है सुनैहरी रात लघन आई मेरे अंगना।

अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर में विवाह सम्बन्धी अनेक लोकाचारों में लग्न संस्कार से लेकर गौना तक अनेक अवसरों पर कन्या और वर दोनों ही पक्षों में लोकगीत गायन की परस्परा है। वर पक्ष की और से गाए जाने वाले गीत–घोड़ी बन्ना, सेहरा व रतुवाई कहे जाते हैं जबकि कन्या पक्ष में गाए जाने वाले गीतों को लाड़ो और सुहाग की संज्ञा दी गई हैं।

जनपद में विवाह के प्रमुख अवसर पर जिन लोकगीतों के गायन की परम्परा है वह निम्न है:–

(i) बान
(ii) भात न्यौतना
(iii) मंडप
(iv) भात पहनना
(v) रतजगा
(vi) घुड़चढ़ी
(vii) पाणिग्रहण संस्कार
(viii) खोडिया
(ix) कन्या के विदा के गीत
(x) गौना

जनपद में कुछ प्रमुख विवाह परम्पराओं के लोकगीत निम्न प्रकार है।

भात न्यौतना

भइया फिक्का लैग पान सुपारी बिना रे।
सिलवा लइये रे भइया, चदरी लईयै रे भइया।
मेरी रतन जड़ाऊ चदरी लैत्ता अइये रे भइया।
सिलवा लाया री भैन्ना चदरी लाया री भैन्ना।
रतन जड़ाऊ चदरी भूल आया की भैन्ना।
सिलवा ————।

रतजगा

चिठियाँ भेज दई भेन्ना नै वीर मेरे भात्ती अइयो रे।
सिलवा लइयो रे वीर मेरी चदरी लइयो रे,
मेरे हरीचन्द राजा कू साफा हरा रंगइयोरे
सुरमा लइयो रे बीर मेरे चसमे लइयो रे कालर लइयोरे
बीर मेरे झालर लइयो रे।
साडी लइयो रे वीर मेरे जम्फर लइयोरे पायल लइयो
रे बीर मेरे छागल लइयो रे।
चिठियाँ भेज दई ————।

घुड़चढ़ी

बन्ने तेरे देक्खन कू लाक्खो खड़े, लाक्खो खड़े जी हजारो खड़े।
सीस बने जी के सेरा सोहे, पेच्ची पे हीरा जड़े। बन्ने तेरे देक्खन कू लाक्खो खड़े।
हाथ बने जी के कंगना सोहे, गुठठी पे मौत्ती जड़े। बन्ने तेरे देक्खन कू लाक्खो खड़े।
अंग बने जी के मलमल का कुरता, बटनो पै हीरा जड़े। बन्ने तेरे देक्खन कू लाक्खो खड़े।

पाणिग्रहण संस्कार

अजी अबी तो पैला फेरा जी, अबी तो बेट्टी माँ–बाप की।
अजी अबी तो दूजा फेरा जी, अबी तो बेट्टी दाद्दा–दाद्री की।
अजी अबी तो तीसरा फेरा जी, अबी तो बेट्टी ताऊ–ताई की।
अजी अबी तो चौथा फेरा जी, अबी तो बेट्टी चाच्चा–चाच्ची की।
अजी अबी तो पॉचवा फेरा जी, अबी तो बेट्टी नान्ना–नान्नी की।
अजी अबी तो छटवा फेरा जी, अबी तो बेट्टी माम्मा–माम्मी की।
अजी अब तो सातवा फेरा फिर गया जी, अब तो बेट्टी हुई पराई जी।

कन्या विदा के गीत

कमरा हुआ उदास आज मेरी लाड़ो तो ससुराल चली।
दाद्दल भी खड़े रोवे, ताऊ बी खड़े रोवै, दाद्दी नै खाई है पछाड़,
आज मेरी————।

मृत्यु संस्कार सम्बन्धी लोकगीत

मानव जीवन के सभी संस्कारों पर प्रायः लोकगीतो के गायन का प्रचलन है। मृत्यु संस्कार भी इसका अपवाद नहीं है। मृत्यु के समय विलाप के रूप में फूट पड़ने वाले गीतों में विषाद की गहरी छाया दिखाई पड़ती है। युवावस्था में किसी की अकाल मृत्यु हो जाने पर स्त्रियाँ करूण स्वर में विलाप करती है और मृतक की प्रिय वस्तुओं का नाम ले ले कर, मृतक के गुणों का स्मरण कर करूण विलाप द्वारा, शोक प्रकट करती है। वे रोदन द्वारा हृदय के शोकपूर्ण उद्गारों को अभिव्यक करती है। जिन्हें लयात्मक होने के कारण गीत की संज्ञा दी जा सकती है। मृत्यु के दुखद अवसर पर

जब अन्य सम्बन्धी लोग संवेदना प्रकट करने के लिए मृतक के घर पहुँचते हैं उस समय करूण स्वर में स्त्रियाँ जो विलाप करती हैं उसे स्याया कहा जाता है। लोकभाषा में इसे पल्ला लेना कहते है।

जनपद बिजनौर में मृत्यु गीत नहीं के बराबर ही है। हाँ शव यात्रा में लोग बार–बार राम नाम सत्य है का उच्चारण करते चलते हैं। ये लयात्मक पक्तियाँ ईश्वर के अमरत्व और मानव शरीर की नश्वरता की ओर संकेत करती है। इसमें मृतक की सद्गति की भी कामना की जाती है।

लोकगीतों पर फिल्म संगीत (चित्रपट) का प्रभाव

जनपद के प्राचीन लोकगीतों पर चित्रपट संगीत का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है और नित्यप्रति पड़ रहा है। चित्रपट– संगीत शैली पर अनेक लोकगीतों की रचना हुई है और हो रही हैं। पढ़ी लिखी आधुनिक बालिकाएँ पुरानी संगीत शैली के गीतों को भूलाती जा रही है और आजकल चित्रपट संगीत शैली पर ही लोकगीतों की रचना कर रहीं है। लोक जीवन में **लेक्कै गौरा जी कू साथ आए शम्भू भोले नाथ कास्सी नगरी से आया है भोला संकर।** फिल्मी गीत **"लेके पहला–पहला प्यार भर के आँखों में खुमार जादू नगरी से आया है कोई जादूगर"** गीत की ध्वनि पर रचित है। जनपद में अन्य अनेक लोकगीत भी फिल्म–संगीत की शैली पर रचे गए हैं। जिनकी प्रारम्भिक पंक्तियाँ यहाँ उदृद की जा रही है।

बन्ना बड़ा हुसियार होक्कै साइकिल पै सवार चल जाए सनीमा देक्खन कू।
अपने बाब्बल सै ना बुज्जै, अपने चाच्चल से ना बुज्जै, लैक्कै हरियाली कू साथ।
बन्ना बड़ा हुसियार–––––––।

भविष्य और सम्भावनाएँ

आधुनिक शिक्षित महिलाएँ आज पुरातन काल से चले आ रहे लोकगीतों को भुलाती जा रही है और अनेक कितने ही लोकगीतों को भुला बैठी हैं, जिनका भण्डार वृद्धाओं के साथ ही चला गया है। नई शैली के लोकगीतों पर चल–चित्र जगत के गीतों एवं उनके संगीत का प्रभाव बढ़ रहा है और पुराने गीत काल– कवलित होते जा रहे हैं। अतः काल–कवलित होते हुए इन लोकगीतों के संरक्षण के लिए इनका संकलन–आकलन एवं अनुशीलन अपेक्षित है। वृद्ध–वृद्धाओं के पास आज भी लोकगीतों का अपार भण्डार सुरक्षित है। यदि जनकंठो में सुरक्षित इस अमूल्य गीत भण्डार का संग्रह–संकलन नहीं किया गया तो ये बहुमुल्य गीत वृद्ध– वृद्धाओं के साथ ही सदा सदा के लिए विलुप्त हो जाएँगे और इससे राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति होगी। अतः काल–कवलित होती हुई पुरातन लोक संस्कृति के दर्पण एवं अतीत काल की धरोहर इन लोकगीतों को सुरक्षित रखना हमारा पावन कर्तव्य ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय धर्म है, क्योंकि ये गीत व्यक्ति विशेष को सम्पति नहीं, अपितु राष्ट्रीय सम्पदा है।

निष्कर्ष

जनपद बिजनौर के संस्कार लोकगीत इस क्षेत्र की समृद्ध लोक सांस्कृतिक परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों की महत्वपूर्ण वाहक रही है। लोकगीत यहाँ मात्र मनोरंजन के साधन नहीं बल्कि लोकजीवन की सामाजिक पहचान के सजीव दस्तावेज है। यह लोकगीत यहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित होते आ रहे हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी उपयोगिता बनी हुई है। जनपद की बदलती जीवन शैली में इनके प्रभाव को थोड़ा कम अवश्य किया है। अतः आवश्यकता है कि जनपद के संस्कार लोकगीतों का व्यवस्थित संकलन तथा दस्तावेजीकरण एवं संरक्षण किया जाए। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जनपद बिजनौर के संस्कार लोकगीत सांस्कृतिक विरासत लोककला तथा सामाजिक जीवन के अमूल्य प्रतीक है। इसलिए इन लोकगीतों का संरक्षण केवल हमारी सांस्कृतिक आवश्यकता ही नहीं है अपितु हमारी ऐतिहासिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी भी है।

सन्दर्भ

[1]. गुप्ता सत्या, खड़ी बोली का लोक साहित्य, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद –1965
[2]. सिंह भगवती, उत्तर प्रदेश के लोकगीत, ओंकार प्रेस प्रयाग–1958
[3]. चौहान विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन आगरा– 1972
[4]. मिश्र, प्रसाद बलदेव, भारतीय संस्कृति, रामनारायण लाल बैनी माधव इलाहाबाद–1966
[5]. सिसौदिया गजराज, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, जनपद बिजनौर के लोकगीती– 1982
[6]. बबीता, थारू एवं बुक्सा जनजाति की कला और संस्कृति, कलमकार पब्लिशर्स प्रा० लि०, नई दिल्ली–2023
[7]. पेटशाली, जगुल किशोर, उत्तरांचल के संस्कार गीत, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली – 2003
[8]. हॉण्डा ओमचंद पहाड़ी लोकगीत, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली –1981

Cite this Article:

डॉ0 बबीता. (2026). जनपद बिजनौर में लोकगीतों का सांस्कृतिक एवं कलात्मक अनुशीलन (संस्कार गीतों के परिप्रेक्ष्य में). International Journal of Emerging Voices in Education, 2(6), 18–22.

Journal URL: *https://ijhce.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i6.103*